

जागदल आहो अललल हंमर

॥ श्री गणेशाय नमः ॥



भवानी प्रकाशन

पटना-800 006

जगदम्ब अहीं अबलम्ब हमर

रचयता

श्री प्रभु नारायण झा 'प्रदीप'

प्रशिक्षित एम०ए०, साहित्यरत्न

कथवार, दरभंगा

प्रकाशक

भवानी प्रकाशन

गांधी निवास, सैदपुर, पटना-4

चतुर्थ संस्कारण

प्रति संस्करण-1000

मूल्य : ३.०० टका मात्र

मुद्रक : त्रिदेव स्क्रिण प्रिन्टर्स, सैदपुर, पटना-800 004

विषय-सूची

१. हे माय अहां बिनु आश ककर	१
२. कयल जखन तुअ ध्याण	२
३. कोरा में उठा ले	३
४. जननि पूर्णकामा	४
५. नहि पाओल पार	५
६. आब ककरा शरण हम जेबई ?	६
७. आबहु नयन उघारू	७
८. हमरा किएक तबाही	८
९. आधार अहीं टा छी	९
१०. सकल चराचर तौरे बस मे	१०
११. ककरा मनाबी	११
१२. रहि न सकब ढहलेल	१२
१३. तौं नहि बिसरि हैं	१३
१४. धरणि बनल सुरधाम	१४
१५. कहबनि अपना मइया कै	१५
१६. अढरण ढरण	१६





१. हे माय अहाँ बिनु आश ककर

जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर,

हे माय अहाँ बिनु आश ककर ?

जँ माय अहाँ दुःख नहि सुनबई,

तुँ जाय कहूँ ककरा कहबइ ?

करू माफ जननि अपराध हमर,

हे माय अहाँ बिनु आश ककर ?

हम भरि जग सँ ठोकरायल छी,

माँ अहिंक शरण मे आयल छी,

देखू हम पड़लहूँ बीच भंवर,

हे माय अहाँ बिनु आश ककर ?

काली - लक्ष्मी - कल्याणी छी,

तारा - अम्बे - ब्रह्माणी छी,

अच्छि पुत्र 'प्रदीप' बनल दूगार,

हे माय अहाँ बिनु आश ककर ?





२. कयल जखन तुअ ध्यान

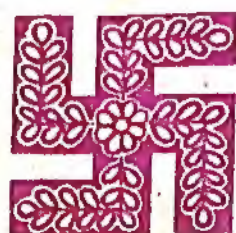
अहाँक चरण-रज जे सिर धारल, पाओल पद निर्वान ।
जकरा अहाँक सदयः दृग भेटल, से बनि गेल महान ॥

युग-युग धरि तुअविनत सकल जनकण-कण छन-छन जागे,
जे शरणागत बनि ढिग आयल तकर सकल भय भागे,
अहांक सिनेह-सुरभि जे पाओल, तेजल सकल अभिमान ॥

दक्षिण कर सेबक सिर राखल भागल ऋपुक तरासे,
बामहाथ जेहि माथ सुशोभित कुमतिक कयल गरासे,
लह-लह जीह म्हुं सँ भीजल, कयल अमिय जग दान ॥

अहांक प्रकाश, प्रकाशित भूतल सुतल जड मतिमंदे,
जननि अहांक ज्योति जग पसरल टूटल दुर्दिन फंदे,
प्रदीपक नयन अहांक द्युति देखल कयल जखन तुअ ध्यान ॥





३. कोरा में उठा ले

लाल छउ लिलोह माँ 'करेज लगा ले, कोरा मे उठा लें
दुनिया मे अपन आर के हेतई ?

जे किछु अपराध हमर बिसरि जाउ मैया,
भव-समुद्र मे डूबैछ आई हमर नैया ।

नेह :- नाव पर चढ़ा किनार लगा दे,

कोरा मे उठा ले, दुनिया मे अपन...

प्रेम के पियास लेने देख कियो एलउ,
माय-माय करैत कियो चरण मे लोटेलउ,
चरण के नहि झाड माय शरण लगा ले-

कोरा मे उठा ले, दुनिया मे अपना...

स्नेह बिनु 'प्रदीप' केर मिझा ने जाइक बाती
कहतइ के, माय छउ कठोर तोहर छाती,
हम अन्हार मे उदार ज्योति देखा दे,

कोरा मे उठा ले, दुनिया मे अपन....





卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐



४. जननि पूर्णकामा

कतऽ छी, हे अम्बे, श्रवण-चक्षु मुनने,
दशा की न देखी । सुनई छी ने अपने ?
हमर दुर्दशा की अहाँ नई देखई छी ।
हमर ई व्यथा की अहां नई बुझई छी ।
जगत ब्यापिनी की जनई छी न अपने, दशा की न देखी....
सुनल अछि कतेको कथा माँ दया के,
सुनल अछि अनेको अमर कीर्ति माँ के,
शरण मे एलउँ तें, सम्हारू ने अपने । दशा की न देखी...
धरणि सँ गगन धरि अहिंकेर माया,
अहिंकेर सुधा सँ बनल शुभ्र काया,
तखन मंजुषा कोन छी नेह रखने । दशा की न देखी ...
अहाँ के शरण मे न जतेऽ जीव आयल,
तकर कष्ट सभटा छने में बिलायल ।
हमर बेर अम्बे रहल शेष तपने । दशा की न देखी...
परीक्षा कते लैत रहबैक माया ।
प्रतीक्षा कते दिन करत तुच्छ काया ।
हमर जन्म अम्बे बनेलउ कि सपने । दशा की न देखी...
जपई छी सदा हम अहि केर नामें...
जननि 'पूर्णकामा' शिवे, श्याम-श्यामे ।
प्रदीपक प्रभा, आब राखू ने झँपने । दशा की न देखी...



卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐





५. नहि पाओल पार

जनम जनम केर थिकहु चिन्हार,
जननि अहांक नहि पाओल पार ॥

जे जननि सभ दुख हरि लेल,
तनिक अपरिचित हम बकलेल ।

बिगड़ल के नित कएल सुधार ॥ जननि...
नचलहु जे नटवर केर संग,
छिलकि जटा वनलहु माँ गंग ॥

पाप विमोचनि सुरसरि धार ॥ जननि...
जनम-जनम बहुतो दुःख भेल,
गरभ जोगाओल ककरा लेल ।

कहिया करब दुःख नदिया सँ पार ॥ जननि...
तेज भरल दृगतेसर दीप,
हम अनुखन जड़ि भेलहु 'प्रदीप'
करब कखन माँ हमर उद्धार ॥ जननि...





卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐



६. आब ककरा शरण हम जेबई ?

तौ ने सुनमं हमर बात मैया, फेर ककरा ब्यथा हम मुनेबई ।
छोड़ तोहर चरणकर आशा, आब ककरा शरण हम जेबई ?
हम ली जेते

हम छी तोरे दया केर भिखारी,
आन करतई हमर के पुछारी ?

स्नेह-सागर तोहर जँ सुखेतई भऽ जेतई सगरो दुनिया भिखारी।
हम तोरे नामकेर लेल माला आब दोसर ककर नाम लेबई।

छउ पसारल तोरे सबटा माया
माटि पानिक बनल तुच्छ काया
जीव-जन्तुओ जगत केर जते छई
भोटि रहलइ तोरे सभके छाया

जै एतेटा तोही माँ बनौले आब बेटा ककर हम कहेबई ?

हम भाने होइ केहनो जँ पापी
पापनाशिनी तोही माँ प्रतापी
स्नेह जा धरि तोहर भेट रहलई
हम प्रदीपे बनल जग मे ब्यापी

छथि जकर माय 'सर्वेश्वरी' माँ, फेर टूगर केना से कहेतई ?
ताँ ने सुनमे हमर बात मैया, फेर ककरा ब्यथा हम सुनेबई ?



卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐





७. आबहु नयन उधारू

जय दुर्गे दुर्गतिनाशिनी माँ आबहु नयन उधारू ।

जँ कतबो पापी हम, तइयो बेटा बूझि उबारू ॥

जगक प्रपंच विषय-ईर्ष्यादिक बनल हमर अछि साथी,

मद-ममता जडता सबसँ अछि घेरल बेढल छाती,

लोभ-घृणा करे उदधि सँ जल्दी पार उतारू ।

जय दुर्गे दुर्गतिनाशिनी माँ ॥

क्षुद्राशा तृष्णा केर वश मे फंसि रहलहु दिन-राति,

अहाँक सिनेह नेह बिनु अम्बे जड़त न दीपक बाती,

जननि ज्योति दय आइ हृदयकेर तमकुहेशकें फारू

जय दुर्गे दुर्गतिनाशिनी माँ ।

जग कहइत अछि काली-कांरी यद्यपि सिनेहक लाली,

‘प्रदीप’ कहए माँ तारा-तारा जगक विपति सब टारू।

जय दुर्गे दुर्गतिनाशिनी माँ आबहु नयन उधाम्





८. हमरा किएक तबाही

जननि हे, कतेक भेलहुँ अपराधी !

अहिंकं चरणं हमं नितदिनं सुमिरल ।

किए रहलहुँ अछि साधि । जननि हे०

आनक शरण कतहु नहि गेलहु,

अहिंक चरण रज माथ चढेलहुँ,

किए रखलहुँ दृग बांधि । जननि हे०

अहिंक कृपा बल सब जन पबइछ,

अन्नपूर्णा कहि सब गुण गबइछ,

रहलहु हमहुँ आराधि । जननि हे०

माँ, माँ, माँ, कहि सुमिरल अम्बे,

जननि अहाँ जनि करिअ त्रिलम्बे,

दिअ दुर्गुण सब टारि, जननि हे०

जे जन थोड़बहु अहाँ के मनओलक,

से ओतबहि मे सब किछु पओलक,

हमरा बेर बताहि । जननि हे०

अथं पिपासुक लम्पट लोभी,

आई चतुर्दिशि दुर्मात क्रोधी,

खुजइछ सभतरि खाधि । जननि हे०

दुर्गे दुर्गति नाशिनी अम्बे

काली कालजयी जगदम्बे

हरू प्रदीपक सब ब्याधि । जननि हे०

कतेक भेलहु अपराधी ?





९. आधार अहींटा छी

माँ अहाँक चरण तेजी जाऊ कत ?
हम आनक दास कहाउ कत
छी जगत जननि, जगदम्ब अहाँ-
हम आनक पुत्र कहाउ कहाँ
सब कयल समर्पित अहिंक एत ?
माँ अहाँक चरण तेजि जाऊ कत
सब शक्ति अहीं मे अछि अम्बे,
छी अहीं जगत के अबलम्बे
सब देवी-देव रहैछ जत॥
आधार अहीं टा छी सब के
साकार करइ छी माँ जगकँ,
शरणागत तखान कहाउ कत॥
दिनकरक प्रकाश अहीं माँ छी,
जल विद्युत शक्ति अहीं माँ छी ।
हम दीव्य 'प्रदीप' कहाउ कत ?
माँ अहाँक चरण तेजि जाऊ कत ? ॥



卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐



१०. सकल चराचर तोरे बस

तोहर सिनेह सुरभि पा पुत्र लिलोह न हैतउ मे ।
युग-युग धरि जगत केर जन शंतान कहेतउ मे ॥

तो सबहक सुधि लैत रहइ छे

तोही जननि महान गे ।

तोरा छोड़ि अपन एहि जगमे,

होयत हितैषी आन के ?

अपराधक जे दण्ड देमे सुत सभटा सहतउ गे ।

तोहर सिनेह सुरभि पा पुत्र लिलोह न हेतउ गे ।

तो लक्ष्मी, काली, तारा, वाणीमा ब्रह्माणी

श्यामा सीता, सहृदय धारिणि, हरतिय कल्याणी

सकल चराचर तोरे बस मे छुड आ रहतउ गे

तोहर सिनेह सुरभि पा पुत्र लिलोह न हेतउ गे

बगलामुखी, भैरवी, गौरी.

विश्व सुन्दरी, माया

कमला, कला, कौशिकी, गंडक

गंगा कण-कण जाया

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शक्ति तोरे मैं पेटउ गो

तोहर सिनेह सरभि पा पत्र लिलोह न हेवन मे

शृष्टि धारणी प्रलय कारिणी,

जग पालिनी, जग माता ।

तोरा सँ बढि भ ने सकदा

कियो जगत मे दावा

निसिदिन तोहर 'प्रदीप' अम्ब बोरे गण मेहर मे

तोहर सिनेह सरभि पा पल सिनेह - नेह -



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥





११. ककरा मनाबी

अहाँ केर चरण तेजि ककरा मनाबी !
अहाँ जँ ने सुनवई तँ ककरा सुनाबी ।
कहइये कते लोक ढोंडी-फरेबी,
कहइये कियो अंध विश्वास संवी ।
कियो इहो कहि दैत अछि मैया वादी ।
चराचर जते सब अहीं सँ पलैये,
अहींक शक्ति सँ अम्ब जगत चलैये ।
सुरभि माँ अहीं सँ सदति काल पाबी ।
कतऽ अछि भवन अम्ब केहिठां बसेरा,
कियो ने जनैये अहांक श्रृष्टि पनेरा,
चलइ छी जत सँ ओतहि पनेर आबी ।
अनेरे अपन नाम राखाल प्रदीपे,
सदत्त खान रहइछी अन्हारक समीपे,
अहींक आश-विश्वास मन मे बसाबी ।
अहाँ केर चरण तेजि ककरा मनाबी ।



१३. तों नै बिसरिहें

तां नै विसरिहि हें गे मे,

तो जँ बिसरमे तऽ दुनिया मे बड़तइ बाँए ।

तोरा बेटा कैं तोरे टा आशा,

तोरा बिना छई ने ककरो भरोसा ।

कोरा सँ ने दिहें बइलेऽ,

तो जँ बिसरमे तँ दुनिया मे परतइ बाँए ॥

कतबो अनठेमे पछोर नहि छोड़बउ,

तोरे चरण सँ सिनेह अपन जोड़बड ।

बेबूझ मे दिहें बुझेऽ,

तो जँ बिसरमे तँ दुनिया मे पड़तई बाँए ।

स्वारथ भरल संसारे ई सगरो,

कियो ने कानब सुनई छई ककरो ।

जाउक ने प्रदीपो मिझे,

तो जँ बिसरमे तँ दुनिया मे पड़तई बाँए ॥





१४. धरण बनल सुरधाम

मिथिलाक धिया सिया,

जगत जननि भेली ।

धरण बनल सुर धाम हे ।

जन्य मिथिक भूमि,

धर-धर ऋषि-मुनि ।

दुलहा जगतपति राम हैं।

कमला बहथि जतऽ जीबछ बहथि, ततऽ

कोशी-गंगा-गंडक के बथान है ॥

हिम-गिरि कर धर गौरीक नइहर ।

शिवजी भेलाह मेहमान हे ॥

यज्ञ सँ तपल एकर कण-कण शुचि,

प्रदीपक जन्म स्थान हे ॥





१५. कहबनि अपना मइया कैं

बाब जँ ठोकरेथिन सबटा कहबनि अपना मैया कँ ।
मैया तों जँ ठोकरामे तँ ककरा कहबई, सुनतई के ?

बेटा करण मुकदमा दायर

अपना माइक कोट में

बाबा तोरा हरादेब हम माइक नेहक बोट मे ।

माफ न गलती कैलहुँ बाबा छोट तनय अज्ञानी कं,

मैया माफ न करती, बाबा अहांक एहि मनमानी के ।

तो' विश्वम्भर भने कहाबऽ

हम नहि देब मोजर हौ,

जा धरि तों ने देख्यबऽ बाबा रूप तोहर जे औढर हौ ।

विश्वम्भरी जननि हमरो छथि, तोरो हुनके शक्ति हौ,

तैयो चाहि रहल छह बाबा आइ प्रदीपक भक्ति हौ ।

धन्य अहीं छी बाबा जग मे

अहिक थीक संसार यौ

मैया रहती संग सदा, तँ करबइ बेरा पार यौ ॥





१६. अहरण ढरण

अढरण-ढरण थिकहु शिव दानी,
 बेर हमर कत गेलहु मशानी ॥
 सिर पर शशि-फणि, सुरसरि धार,
 कंठ सोभए रूद्राक्षक हार ।
 सदिखन संगहि सदय भवानी ॥ बेर हमर
 आसन-वसन मृगा केर खाल,
 सुन्दर पाँच विभूतिम भाल ।
 तीन नयन सेहो चमकए चानि ॥ बेर हमर
 हेम शिखर पर कलहुं बास,
 बसहा सेवक, बाघ खवाव
 काल, जयी काली कल्याणी ॥ बेर हमर
 भोजन भाड, धथुर बेलपात,
 पीसथि जननि गौरी साझ परात ।
 अहिंक कृपा बल जिवइछ प्राणी । बेर हमर
 तेसर नयन जड़य जनु दीप,
 हम जड़ि-जड़ि नित, भेलहु 'प्रदीप'
 चरण लोठएलहु हम कानि-कानि ॥
 बेर हमर कतए गेलहु न जानी ॥

